ज्ञान शांति मैत्री

मीडिया समय

गुरुवार 9 मई 2019

जनसंचार विभाग के विद्यार्थियों का प्रायोगिक अखबार

महादेवी छायावाद की परिधि से बाहर : विजय बहादुर सिंह

महादेवी वर्मा छायावाद की परिधि से बाहर की कवयित्री हैं। जिस तरह से जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत और सूर्यकांत त्रिपाठी निराला में छायावाद की मूल प्रवृतियां पाई जाती हैं उस तरह से महादेवी वर्मा में नहीं हैं। उन्हें उसके समापन का कवि कहा जा सकता है। यह बात 'छायावाद के सौ वर्ष' विषय पर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय संगोष्टी में प्रसिद्ध समालोचक प्रो. विजय बहादुर सिंह ने कही। प्रो. सिंह ने कहा कि छायावाद को तीन नामों से संबोधित किया जाता है। इसमें पहला स्वच्छंदतावाद दूसरा रहस्यवाद और तीसरा छायावाद है। छायावाद हमारी परंपरा का हिस्सा है लेकिन वह परंपरा से टकराते हुए खड़ा हुआ है। कोई नई परंपरा तभी बनती है जब वह पुरानी से टकराए। उन्होंने इस सिलसिले में कालिदास और वाल्मिकि को याद किया। प्रो. सिंह ने विजय देव नारायण साही का उल्लेख करते हुए कहा कि उन्होंने छायावाद को सत्याग्रह युग कहा था। इस तरह से छायावाद में स्वाधीनता आंदोलन उपस्थित है। प्रख्यात आलोचक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने जब छायावाद की आलोचना की तो उन्होंने उसकी लाक्षणिकता पर ध्यान दिया। उसकी कथावस्तु पर ध्यान नहीं दिया। दरअसल शुक्ल जी की संवेदना बुढ़ा गई थी।

परंपरा कालखंड में बंटी हुई चीज नहीं : रजनीश कुमार शुक्ल

कुलपति रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि परंपरा एक होती है दूसरी और तीसरी परंपरा नहीं होती है। इसलिए दूसरी और तीसरी परंपरा की अवधारणा का निषेध है। वहीं छायावाद भारत की महान परंपरा का हिस्सा है। मर्यादाओं के अतिक्रमण और हिंदी में कविता के मूल्यांकन को बिना काव्यशास्त्र के समझा नहीं जा सकता है। सौ वर्ष के पहले जो कटु आलोचनाओं के शिकार थे वे आज मर्यादाओं के नए निर्माण के कवि हैं। कविता सभी कलाओं का आधार है। शिल्प वेदांगों का हिस्सा नहीं है। डिजिटलाईजेशन के इस युग में हम स्थूल से सुक्ष्म की ओर जा रहे हैं। मैक्रों से माइक्रो और नैनों की ओर जाती तकनीक को हम कला नहीं कह सकते हैं। कला वह है जो हमारी चेतना का विस्तार करती है और उपभोग्य को निरस्त करती है।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की 158वीं जयंती पर पुण्य स्मरण।

अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज
को मिलता एक सहारा।।
सरल तामरस गर्भ विभा पर,
नाच रही तरुशिखा मनोहर।
छिटका जीवन हरियाली पर,
मंगल कुंकुम सारा।।
लघु सुरधनु से पंख पसारे,
शीतल मलय समीर सहारे।
उड़ते खग जिस ओर मुँह
किए, समझ नीड़ निज प्यारा।।
बरसाती आँखों के बादल, बनते
जहाँ भरे करुणा जल।
लहरें टकरातीं अनन्त की,
पाकर जहाँ किनारा।।
हेम कुम्भ ले उषा सवेरे, भरती
ढुलकाती सुख मेरे।
मंदिर ऊँघते रहते जब, जगकर
रजनी भर तारा।।

जयशंकर प्रसाद

पुष्पिता अवस्थी

हॉलैण्ड से आई हिंदी की अंतरराष्ट्रीय साहित्यकार और विश्वविद्यालय की आवासीय लेखिका प्रो. पुष्पिता अवस्थी ने कहा कि छायावादी काव्य यात्रा विभिन्न विधाओं से तैयार होती है। हर सदी के पास अपने शब्द होते हैं। जिनसे काव्य का एक कालखंड तैयार होता है। पाठ्यक्रमों में छायावाद को उस तरह से नही पढ़ाया जाना चाहिए जैसे उसे पढ़ाया जाता है। उसके अध्ययन और अध्यापन में शुष्कता की जगह तरलता और आद्रता होनी चाहिए। छायावाद को पर्यावरण और प्रकृति के साथ जोड़कर पढ़ाया जाना चाहिए। अपनी तत्सम बहुलता के बा. वजूद छायावाद अपने उत्तरयुग में भी लोकप्रिय है तो इसका कारण प्रकृति और पर्यावरण का विशद चित्रण है।

कृष्ण कुमार सिंह

हिंदी और तुल्नात्मक साहित्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने कहा कि उत्तराधुनिक समय में हम स्मृतिभ्रंश के शिकार हुए है इसलिए छायावाद का स्मरण आवश्यक हो गया है। छायावाद के उदय के समय इसका बहुत विरोध हुआ था। छायावाद के कवियों को कविता के खेती घरने वाले पशुओं के रूप मे प्रस्तुत किया गया था। ऐसा स्वय आचार्य रामचद्र शुक्ल ने कहा था। बाद में छायावाद को प्रतिष्ठा दिलाने मे जिन विद्वानों ने मुख्य भूमिका निभाई उनमें आचार्य नद दुलारे बाजपेयी प्रमुख है। रामविलास शर्मा ने कहा था कि वही महाकवि हो सकता है जो तुलसी से टकराए। उन्होंने दिखाया कि निराला तुलसी से जहा टकराते है। इसी को ध्यान मे रखते हुए ये कहा जा सकता है कि छायावाद से टकराए बिना कोई महान साहित्यकार नही बन सकता।

प्रीति सागर

साहित्य विद्यापीठ की अधिष्ठाता प्रो. प्रीती सागर ने कहा कि जो राजनीति में गांधीवाद है वहीं साहित्य में छायावाद है। छायावाद नाम उस आंदोलन के लिए रूढ़ हो गया है लेकिन उसमें कई तरह की प्रवृतियां हैं। इसमें मानवता का उच्च आदर्श भी है। यह वही आदर्श है जो गांधी के आंदोलन में दिखाई पड़ता था। छायावादी काव्य आंदोलन के वैसे तो प्रसाद, पंत, निराला और महादेवी वर्मा जैसे चार प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं लेकिन ये चतुष्पदी के अलावा और भी बहुत से रचनाकार हैं जो छायावाद को समृद्ध करते हैं। छायावाद ने हिंदी को एक समर्थ भाषा दी है और समाज को कल्पना की दृष्टि दी है। उन्होंने महादेवी वर्मा की पंक्तियां उद्धृत करते हुए कहा कि जाग तुझको दूर जाना। ये भारत को आगे ले जाने का आह्वान है।

हनुमान प्रसाद शुक्ल

भाषा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रोफेसर हनुमान प्रसाद शुक्ल ने कहा छायावाद की आलोचना मे बड़े आचार्यों ने बड़ी भूलें की हैं। कुछ भूलें हम लोग भी करते हैं। इसलिए छायावाद की चर्चा आचार्य नद दुलारे वाजपेयी की दृष्टि से करनी चाहिए। वास्तव मे छायावाद के कवियो के अलग अलग नही देखना चाहिए। वे एक ही है और इसके केंद्र मे प्रसाद हैं।छायावादी कवियो का काव्यभूमि की बनावट अलग या भिन्न नहीं है। इसमें सिर्फ स्वभाव का फर्क है। आचार्य शुक्ल की छायावादी आलोचना की पृष्ठभूमि में भ. फिकाल की पृष्ठभूमि है। यह भाववाद से मुक्त नही है। उसी जमीन पर सबने अपने समय की परिस्थितियों का साक्षात्कार किया है। मुक्ति की कामना बाहरी और आंतरिक दोनों है। जिसे सबसे ठीक ढग से प्रसाद जी ने समझा है।

संपादन, पृष्ठ सज्जा और समाचार संकलन – राहुल, अनुराधा, लक्ष्मी, बरखा नेताम, गौरव गुलमोहर, सुयश, श्रीनेत्र, आरती, दीपक और नागेन्द्र

मीडिया समय

गुरूवार, 09 मई 2019

छायावाद के सौ वर्ष के अवसर पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी मे अध्यक्षीय वक्तव्य देते कुलपति प्रो रजनीश कुमार शुक्ल।

साहित्य में दार्शनिक उपस्थिति हैं प्रसाद

इरतेखार अहमद

वर्धा। 'जयशंकर प्रसाद साहित्य में एक दार्शनिक के रूप में उपस्थित हुए हैं। वे जिस मार्ग पर चलते हैं इतिहास से उसका प्रमाण भी देते हैं।' यह बातें कहीं प्रो एस शेषारत्नम ने। वह छायावाद के सौ वर्ष के अवसर पर आयोजित संगोष्ठी के द्वितीय सत्र में अध्यक्षीय वक्तव्य दे रहे थे।

संगोष्ठी के दूसरे सत्र में जयशंकर प्रसाद और सुमित्रानंदन पन्त की काव्य रचनाओं पर विस्तृत चर्चा हुई। इस सत्र में प्रतिभागी शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों ने शोध पत्र प्रस्तुत किया। झाँसी से आये डॉ मुन्ना तिवारी ने आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के बहाने छायावाद के विविध आयामों पर प्रकाश

डाला। उन्होंने कहा कि कामायनी हमारे सम्पूर्ण इतिहास –चिन्तन की उपलब्धि नहीं प्रलब्धि है।

डॉ रामानुज आस्थाना ने अपने वक्तव्य में दोहराया कि छायावाद पर गाँधी का प्रभाव है। उन्होंने कहा कि सभी समीक्षकों के लिए कामायनी एक परीक्षा स्थल है। कामायनी में एक सभ्यता के समाप्त होने और दूसरे सभ्यता के सृजन की कथा है। डॉ रमाकांत राय ने कहा कि प्रसाद जी ने अपनी कविताओं और नाटकों को आधुनिक और तत्कालीन सन्दर्भों में वर्णित किया है। प्रसाद ने अपने सभी नाटक इतिहास के विभिन्न कालखंडों को ध्यान में रखते हुए लिखा है इसलिए उनका स्थान छायावादी कवियों में सबसे अलग है। डॉ उमेश कुमार सिंह ने सुमित्रानंदन पन्त जी व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि पन्त जी प्रकृति–प्रेमी थे बचपन में ही माँ का स्वर्गवास हो जाने के कारण वे प्रकृति की गोद में अपना अधिकांश समय व्यतीत करते और वहीं से कविता की प्रेरणा प्राप्त करते रहे। मुंबई से आये प्रो. शीतला प्रसाद दूबे जी ने कहा कि प्रसाद जी की कविताओं में विषाद और सुख दोनों परस्पर विरोधी हैं।

जनसंचार विभाग के विद्यार्थियों द्वारा तैयार प्रायोगिक समाचार पत्र 'मीडिया समय' का लोकार्पण संगोष्ठी के दौरान हुआ।

'मीडिया समय' की तैयारी का अवलोकन करते कुलानुशासक प्रो मनोज कुमार एव अध्यक्ष प्रो कृपाशंकर चौबे

समसामयिक मुद्दों पर होगा 'मीडिया समय' का प्रकाशन

वर्धा। विश्वविद्यालय का प्रायोगिक समाचार पत्र स्थानीय, राष्ट्रीय व वैश्विक समसामयिक मुद्दों पर विशेषांक निकालेगा। इसकी घोषणा जन संचार विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर कृपाशंकर चौबे ने की। वह छायावाद के सौ वर्ष पर आयोजित संगोष्ठी के दौरान प्रकाशित किए गए प्रायोगिक समाचार पत्र की समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे। इस मौके प्रो अरुण कुमार त्रिपाठी व श्री संदीप कुमार वर्मा उपस्थित रहे।

संगोष्ठी में दिनभर

संगोष्ठी का शुभारंभ करते कुलपति प्रो रजनीश कुमार शुक्ल व मुख्य वक्ता प्रो विजय बहादुर सिंह।

गालिब सभागार में जनसंचार विभाग के विद्यार्थियों द्वारा निर्मित न्यूज बुलेटिन 'वर्धा दर्शन' का प्रसारण किया गया। इस बुलेटिन मे संगोष्ठी के उद्देश्यों के बारे में जानकारी दी गई।

छायावाद के दौर पर अपने विचार व्यक्त करते मुख्य वक्ता प्रो विजय बहादुर सिंह।

वक्ताओं की सरस वाणी का आनंद लेते हुए विश्वविद्यालय के अधिकारी, प्राध्यापक एवं प्रतिभागी।

संगोष्ठी के मौके पर जुटे प्रबुद्धजनो ने सामूहिक छायाचित्रण करवा कर इस मौके का दस्तावेजीकरण भी कराया।